સિપાઇનદાનો કિસ્સો



મુંબઈમાં

શેખ નુરૂદીન બીન જીવાખાન

એજોએ સફદરી પ્રેસમાં

છપાવી

પ્રગટ કર્યા છે.

સન ૧૮૮૫ ઈ૦

सिपाई न्हानो क़िस्सो.

इजाज़त है मुझे थोड़ीक तक़रीर,
करूं तालनसा क़िस्सा अेक तहरीर.
नया क़िस्सा है और तालन कहानी;
रहे मुझसे इलाही ये निशानी.
पढे जे इसको होवे मुझमो शाद;
करे नेकीसे मुझको बेशतर याद.
कहानीको मेरे शोहरत अता कर;
न देखे अैबसे कोई भी इसपर.
अगर देखे सुखनवर नुक्सा और अैब;
तो वो इसलाह दे इसको जिसरे ग़ैब.
मैं ये कहता नहीं जे अैब है ये;
सरासर तबरहा है अैबसे ये.

इसीमी है वतन मेरा करीब पूर;
शराबे इश्कसे रेहताहुं मखमूर.
छिपाताहै मुझे गरदुन जहांनमें;
हरयक शाहरो दयारो हरमकां में.
नजर पडताहै जिस गुलजारमें गुल;
वहीं होता हुं शैदा मिस्ल बुलबुल.
सदा गरदिशमें ले रहताहै गरदुन;
हमेशा मैंली हूं मानिंद मजनून.
कभी बनताहुं दहली गाह लाहोर;
कभी डासी आलुदिया गाह जीबनोर.
मुरी आताहै मुझे छोडे मोहब्बत;
नहीं रेहता जलुब छिडे मोहब्बत.
जमानेमें हुं जहोत दिवानये इश्क;
वलेकीन पे नहीं अहेसानये इश्क.

ये किस्सा औरसी है कुछ अजायेब;
निहायत है अजायब और गरायब.
मोहब्बतका सी गो इसमे है मज़कुर;
वले याके मोहब्बतसे है कुछ दूर.
यही तालुम है करने के लायेक ;
यकीन हरअेक होवे इसका शायेक.
लिखारी दास जी बनुरीसे उस ढब;
सुना सो है बयां करता हूं मै अब.
अे प्यासाकी है तुझमें जो कुलमखिश;
अे कुछ तुने सुना है जेशोकम लिख.
नहो सैबोंका गर मज़मून आली;
वले कीन हो फसाहतसे न खाली.
इबारत सादे में लिख इसको इसतोर;
के आवे फहममें हरअेकके बिलकोर.

नहीं है तूजसे हरदम मुझे थोड ;
ईआरत मुफ्ते सरसे दिलजो है लेड.

चित्र

सिपाई और शाह्जदा.



किसी बस्तीमें रेह्ता ऐक नवाब था ;
हसीनो हुशीयारो डारदां था

हमेशा अपने घर रहताथा पुरानूर
के सब कुछ पासथा खानेको मौजूद
कहीं जानेका था उसको नाकुछ काम
हमेशा अपने घर रहता ब आराम
जनो फेर जंगसे रखताथा उसदेल
न जाता कहीं कुछ दिलमें फेरकन
हुई जब ऐक मुद्दत गुजी आखीर
रही आसूदगी इसपर न वो फिर
जो वो बैठा रहा इस तरह पर घर
ठिकाने लगगया सब पासका जर
बहोत जब तंग दस्ती ने सताया
तो आखिर ये नवाके दिलमें आया
के पेशकर नौकरी कीजे कहीं जाकर
लगाहै बैठना घरमें नहीं अब

हुआ जाहिर कहीं को वो रवाना ;
गयाते घरसे छोडके आबो दाना .
गरज पोहंचा किसी दरबारमे वो ;
हुआ नोकर किसी सरकारमें वो .
वलेकीन इस तरहकी थी वो सरकार ;
के बिलकुल थे मुलाजम उसें जेरबार .
किसी नोकरकु उस सरकारसे गाह ;
खुशीके साथ मिलती थी न तनखा .
मियांको नाहे हिंदीका था आजार ;
थे उस आजारमें दायम गिरफ्तार .
न थे कुछ नाहे हिंदीमें ही मशहूर .
बहोतथे तंगदस्तीसे भी मजबूर .
हवांने वहां गरज लाचार जारे ;
बहोत सख्तीसे अपने दिन गुजारे .

हुये अब नौकरी करते कई माह;
लेगा तब मांगने वो अपनी तनख्वा.
कहा ये हुक्म मत घबरा सिपाही;
पडी है क्या तेरे ऊपर तबाही.
नहीं तहवीलमें कुछ आज कल जर;
यहांसे खुश करें हम तुमको देकर
शीताब अब होगई तहसील जारी
दिलावेंगे तेरी तनख्वाह सारी.
न घबरा और तकाजा भी न कर तू
के बिन मांगे तलब हम देंगे तुमको.
सिपाहीने कहा फिर ठोक कर खम;
के अब करते नहीं यहां नौकरी हम.
नहीं ये नौकरी मुझको गवारा;
के हरगीज यहां नहीं अपना गुजारा.

मुलाज़िम ने तलब अपनी न पावे ;
कहो किस लिये वो खाने को जावे.
किसी अब औरकी बस्तीमें जाकर ;
तुम्हारे हैलसे हुंगा मैं नौकर.
बस अब कहते हो रुखसत दीजिये आप.
मेरी तनख्वाह मुझको दीजिये आप.
तुम्हारी नौकरी अब हमने छोड़ी ;
दिखादो तुम हमारी कौड़ी कौड़ी.
अगर मैं अब तलब अपनी न पाऊं ;
तमाशा ऐसा तुमको दिखाऊं.
सिपाहीने मचाई लड़के ये धूम ;
हुवा सरदारको जिस दम ये मालूम.
कि ये अपनी तलब जबतक न लेगा ;
हमें तबतक न हरगिज चैन देगा.

ख़िलाफ़ उसकी तलबका करही दिले;
किसी वजसे मुख़ालिफ़ उसको कीजे.
वलेकीन क्या करें तदबीर अब हम:
के कुछ अपने नहीं है पास उसदम.
सिपाहीसे कहा फिर अे सिपाही;
कहीं तुझसा न होगा कोई वाही.
अलीसे यहां तेरा पजरा गया है;
गुज़रा यहां न तुने अेक जरसली.
तुनाहक नौकरी अब छोडता है;
मुरव्वतसे तु क्यूं मुंह मोडता है.
हमारा जानता है हाल मामूर;
के अेक कौडी नहीं है पास मौजुद.
गया है मर तेरे दिलपर यही मैल;
तो अच्छा हम तुम्हें देते हैं अेक बैल.

तुझे छद नउद देवे हम ठकांसे;

रेडत भेड जैस लेक्म हूं यक्कांसे.

सिपाही नौकरीसे तंग थाही;

पैसा भेठ जैसही लेकर सिपाही.

जैसपेर सीपाही.



बहौत वो जैल रेखा और डलांथा;

कषीथा जैसा क़िमत और ज़वां था.
ग़रज़ उस बैलपर बैठकर वतनको;
चला वहांसे वो समझा अपने मनको.
कि गो तुने जहान यहां दुख उठाया;
वले ये बैल अच्छा हाथ आया.
अगर ऐसें कहीं इस बैलको हम;
रखैं इसके मिलें कुछ साठसे कम.
ये कहताथा वो कहता अपने मनमें;
मिले दो ठग उसे इतनेमें बनमें.
सिपाहीका ठगोने देखकर बैल;
किया अपने दिलोंमें उसपही मैल.
कि गर अपने लगे ये बैल फ़िर हात;
तो क्याही मौज़ है वल्ला ये बात.
पर उसके पासहैं दो चार हतियार;

के इससें हाथ आना बैल दुशवार.
मगर कुछ और की तदबीर किजे;
किसी ढबसे इसीका बैल लिजे.
ये केहकर दोनुं जोगे उस किसांसे;
के तुम इस बैलको लाये कहांसे.
अगर बेचो तो इसको मोल लें हम;
जो ठैरे इसकी कीमत तुमको दें हम
कहा अब बेचता हूं लिजिये आप;
पसंद इस बैलको अब कीजिये आप.
जो मैं ये बैल अपना तुमको दुंगा;
रुपै इस बैलके मैं साठ लुंगा.
कहा इसका जो ठैरे मोल इस तौर;
वो ठैरे जो के अब केह दे कोयी और;
चलो आगे कोई मिल जायगा अब;

वो ठैरेगा औ ठैरायेगा वो अज·
सिपाहीने कहा अच्छा कहो तुम;
औ कुछ ठैहरेये किमत लोकी देतुम.
रहा है थोहर सी अज यहांसे नजदीक;
जहां उसका मोल वहां होजायगा ठीक.
वो दोनो ठग हकीकी थे बिरादर;
उसी जगमें था उनका पासकी घर·
अमीरा और मुनीरा उनका था नाम;
हमेशा रहजनीसे उनको था काम.
ठगाईके लिये फिरते सदा आप;
फिरेहो वतके लिये रहताथा घरआप.
दगासे मकरसे रहता सुख्यकर;
सिपाहीको गरज वो लेगये घर·
ठगोंके घर थे आ पोंहोंचा सिपाही;

तब उसने दिल में ये बात जानी;
के ये ठग हैं और उनका घर पास ही है;
सो इनको माल का उसल अजतर है.
खुश इनने जबे अब किसतराह लन;
के जो ठग आ रहे हैं हम यहां आन.
ठगों के घर गए इस वो पहोंचा इसवां इज;
बहोत खुशी होके खुशूने कहा तब.
के ऐ बेटो ये कैसा अच्छा हुवा है;
ले आया बैल पर ये ठाकुर यहां है.
कहा बेटोंने अपने आपसे यूं;
के भला आपने आया ये है कीयूं.
अब इसके बैल को हम मोल लेंगे;
ले कुछ के घोगे तुम सो उसको देंगे.
नहर उसके तरे अब किये आर:

और उसका मोहसनी उसके लिये आवे.

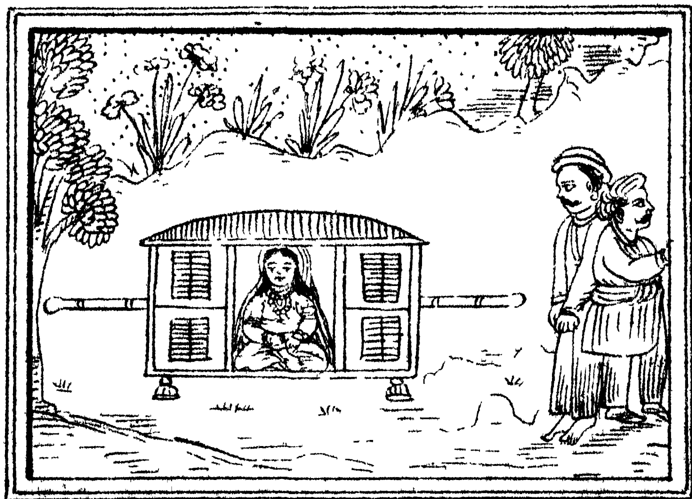


हमें मंजूर है कहना तुमहारा;
कहो अब फैसला ये तुम हमारा.
वो बोला मैंने अबये बैल देखा;
सो है ये बैल उसका बेटे का.
सुना ये बोल जब उसकी जबांसे;

येजाये जैल छोड अपना वहांसे·
डरा जातेकुं घरको अपने देसमे;
जोकुछ होगे डरा लेंगे वही हम·
ये कहेकर उन लोगोंसे वो सिपाही;
हुवा घरकी तरफ़ को वहांसे राही·
कही घर जाके उसने अपनी येजात;
के आई थी मेरे अेक नौकरी हात·
न देखा जे मगर अपना गुजरा;
किया उस नौकरीसे मैं किनारा·
लगाया नौकरीमें जैल अेक हात;
सो अेक रस्तेमें मिलकर दोनो जहलत
जमीदाया उन्होंने गाओ मुकसे;
गरज ऐसा अजब अेक हाथ मुकसे·
दिये मुझको नहीं कुछ जैल के दाम;

किया अच्छा नहीं दोनोंने ये काम.
फिर एक दिन पास उनके आऊंगा मैं;
किसी ढबसे कुछ उनसे लाऊंगा मैं
ठगोंने तीन दीनके बाद लाचार;
किया अपना जनाना भेस एक बार.
बना इस तरहका नाज़नीन कस
के जे देखे सो आशीक हो वहीं बस.
कहार उसने बुलाके खूब कुराया;
मंगाया एक डोला ली तरफ़ दार.
सवार और होके डोलीमें सिपाही;
हुवा घरसे ठगोंके तर्ई राही.
ठगोंका रेहगया नज़दीक घर जब;
कहारोंसे सिपाहीने कहा तब.
के इस डोलीको यहां रखकर के अब तुम.

चले अब्बो यहांसे घरको मैं हमं;
अगरचे सब तरहका ख़ौफ़ है यहां;
मगर अल्लाह मेरा है निगेहबान.
कहारोंको मुहाफ़ा रक्खें इसतौर.



लिया रस्ता वहांसे घरका दिलगीर.
घड़ी एक वहां हुई जब उसको आखीर.

यो दोनो हम पीसे आये नज़रहीर.
नज़र आया हमको खुश वो जेला;
वहीं जेलेका पहरा नहें चोखा.
नज़र औरत पडी जेलेमें बसहम;
मुझे दोनुं निहायत रोषो जुरुम.
कहा मैं ने उजन्त आई कहांसे;
जयाउर तूं यहां आई कहांसे.
तू अपने सब हमसे कहे हाल अपना;
छुपा मत हमसे कुछ अहवाल अपना.
कहा उसने कहुं क्या अपना अहवाल;
अगर्चे है तुम्हें तुलफ़ी मेरा अहवाल.
मेरे मांबाप हैं मेरा रोहर;
हुआ उर रंजसत और मैं अजनमें आऊं.
निकाला मेरा खबर आह सारा;

किया फिर साथसे मेरे किनारा:
वो दौडकर टल गया अज साथसे आह;
कहारोंने ली अपने घरकी जी राह.
पूछी थी कुछ बात मुझसे न इनकार;
न जानुं क्यूं हुवा वो मुझसे बेजार.
मुझे वो छोडकर यूं बे ठिकाने;
गया यहांसे कहां अल्लाह जाने.
न निकली थी कभी मैं घरसे बाहीर;
करूं अहवाल अपना किसपे जाहीर.
पडी हुं बनमें लावारस अकेली;
बजज इस बांदीका है अल्लाह बेली.
सुहागने पडुं मैं किसके पाले;
पडे आने केली अब मुझको लाले
कोई होगा ना अब अंदेरा अैसा;

मिलाया मेरा खोकर मुझको जैसा;
कहा हम ढूंढने जाते हैं उसको;
अभी यहां ढूंढकर लाते हैं उसको.
तमासे छोकरो ठोरकी अजब है गौर;
लगे वोह ढूंढने हर तर्ह दिलजोर.
कुजे हर तर्ह वो जंगलमें जैयां.
नजर आया न उनको कोइ इनसां
न पाया खज कहीं जनमें किसीको;
तो आ घेरा ठगोनें फिर ईसीको.
कहा हम सारा जंगल देख आये;
कहीं तेरे मियां हमने न पाये.
जगा जे हईथी खांविंद तेरा;
कै खलने ईस तरहां मुं तुझसे मोडा.
तवक्का उसके मिलनेका न कछ तूं;

निगाहे लुत्फ़से अब देख ईधर तुं.
आख़िर हम तेरी दिलदारी करेंगे;
शिकायत उससे गमख़्वारी करेंगे.
दिया है तेरे यौं हुसनने बुरा काम;
फिर उस कमबख़्त का हरगिज़ न ले नाम.
हुआ बेहतर गर तेरे वो रैसे;
तुझे क्या काम उसकी सुरत से.
गरज़ हम पुछते हैं तुझसे दिल्ली;
के गर तुझको रखे कोई रहेगी.
अदासे यो दिखाकर अपने अतवार;
कहा मैं अब तो हुं हरतरह लाचार.
तलाक़ और अब मैं क्या करेंगी;
मुझे जो कोई रख लेगा रहुंगी.
रहेगी गर न येह अंदेली ऐस दल;

तो लेवेगी लला आज यहांसे निकल.
घर अपने मुझको ले जाके रखेगा;
बड़ा अहसान वो मुझपर करेगा.
ले देखे उसकी आंखें सुरमा आलूद
यहीं आशिक हुए वो दोनो मगरूर.
कहा एकने के तूं मेरी रक्षा कर;
वो बोला दूसरा तूं रेह मेरे घर
ब्याहा उसे खुशी रखुंगा मैं तुझको,
के अब ये तेरी ख्वाहिश होगी मुझको.
कहा फिर दूसरेने मैं ब्याहा;
तेरी खिदमतका रखता हुं ख्याल.
दिलो जांसे तेरी खिदमत करुंगा;
तेरी मरजीके मैं ताबे रहुंगा.
लगी होने लगे यूं दोनोमें तकरार;

तबे दोनों से ये बोली फिर वो कुटनियार:
के कोई औरती है घर तुम्हारे;
कहा हां किस्सेगा कहेंगे हमारे.
कहा कुछ मत करो तकरार यहां तुम;
यहां से ले चलो मुझको वहां तुम.
कहेंगे वो मुलुर्गम्जज इस तरह;
पइरा किइयो तुम उस तरह.
गरज कोलीको वो दोनों उठाकर;
पिदर के पास उसको लेगये घर:
सिपाहीने वहीं पर आंख दिखला;
किया जुरूंको आपके अपने रेखका.
कहा बेटोंने फिर ये आपसे हाल;
के इस औरत का है एक बुरे अहवाल.
गया आखिर उसका होस इसकल;

भला अजये खियाली भवे किसन ;
रहा ये पोहती है घर हमारे ;
इसे हम पास लाये हैं तुम्हारे
रहे ये पास मेरे या के उसके ;
रहे ये अब कहो तुम पास किसके.
खुशाली देख मुझको उसको शौक ;
कहा मुझने बेटोंसे कहुं क्या.
अगर तुमने किया अब आप पे काम;
तो रोटीका भी होगा मुझको आराम.
रहेगी ये अगर घरमें तुम्हारे ;
न हर गिज काम आवेगी हमारे.
भला बेटो करो तुम किउंना यो काम;
के रोटीका हो इसमे सबके आराम.
रहेगी घरमे मेरे पास वल्लाह ;

तो जैसे पुरी रहेगी हुस्न दिलरुबाह.
सुना सिर्फ तुम्हें जस जजयेहीजात.
डे हरगिज मत लगा वो तुम उसे हात.
ये सुन जात जेटोंडा गया दोरा;
गरज वो हो रहे लाचार आमोरी.
जवां रहने लगा जुडॅडे जजपास;
रही जेटों डोली हरगी जन नउछ आस.
वो जुडॅा पास रखताथा जवां डो;
दिया उरताथा उसपर अपनी जंडो.
पिलाताथा उसे पाने अजयज.
निहायत ही अजयज और गिरायेज.
डली घरमें डा उसको जर दिखाता;
डली जेवर डली गौहर दिखाता.
मडांमें जस उदरथा नउहो जजनास;

दिखाया सब. उसे रबगात दिल पास.
कभी कहता था तूं घरकी है मालिक;
तमाम इस ज़ेवरो ज़रकी है मालिक.
नसीब अपने थे तेरे जो मेरी जान;
जो बेटे मेरे ले आये तुझे यहां
बहोत होती तुझे हरतरह प्यारी
अकेली बनमें फिरती मारी मारी
अगर होती यहां पर और भी देर;
तो खा जाता तुझे आकर कोई शेर
जो बर तक़दीर मर जाती मेरी जान;
कहां पाती तू कोई मुझसा इनसान.
ज़रा तूं भी तो अपने दिलमें कर गौर;
के करता हुं मैं तुझपर प्यार किस तौर.
दिखाऊं क्या क्या तुझको चीज़ घरकी;

नहीं तेदाद यहां कुछ सीमो ज़रकी.
खुदा का शुकर कर अब तु दिन और रात
के ऐसा मुरत आया घर तेरे हात.
जो कुछ दिल चाहे सो खाने को तूं खा;
सदा ढोलक जश्न और राग तूं गा.
अगर दिल चाहे रख पोशीशी ज़रीकी;
लगेगी लगने तू सूरत परीकी.
तु पेहना चाहती है जैसी अंगीया;
बनाले बेतकल्लुफ़ वैसी अंगीया
नथ और चुडी जो जैसी होवें दरकार,
सो हो सकती है वैसी दम में तईयार.
बुलाक अच्छी तूं रख एक नाक में बन;
व बाली झुमकों से अपने रख कान.
करा दूंगा मैं चौथा जब तईयार;

ठेन्उसकी हूरन्तक अबेगी कीनकार।
तूं पीरमाया नकर अज छीस तराहलन।
के आखिर तुझको रेहना है सदा यहां।
तुझे है मुझसे मुझको काम तुझसे।
छुपाया करन तूं मूंह अपने मुझसे।
मैं समझा तू जके घरकी है बेटी;
नहीं अजात क किसीके पास लेटी।
हुया है यै नाहकी मालूम मुझको;
के हर बेक जातमें है पीरम तुझको।
हयासे तूं ना मुंहको खोलती है;
हयाके मारे तूं कम बोलती है।
मगर क्यूंकर तसल्ली होवे मेरी;
अली बेक आंख देखी हैगी तेरी।
पेनराम आबाहसे उसने कहा यूं;

के अबकी ऐसा इधर करते हो तुम क्यूं;
हुए हैं मुझको दीन यहां तीन या चार;
अलीकुं शर्म के हातोंसे नाचार.
हम आगोशी की मुझको किया नहीं अबके;
मुझे तो आप इन बातोंसे है शौक.
गरच ऐसी अवां जाते जनाता.
के मुहँ को पड़ीं रिजशौर आता;
पले अते वो जेटे अज कहीं को;
वो छुता अज अपाने शरमगीं को.
लगा जुडाँ अवां परडालने हात;
यही चाहा के सोवुं उसके मैं साथ.
सिपाहीने कहा शरमाके अपचार;
के कैसे आप है दान्वा वहुरी यार.
निका अबतक नहीं होता मेरे साथ;

लगाना है मुनासिब अब तुम्हे हाथ:
कहा मौजूद है घरमे सभी चीज़;
तू करती कीवन ही है इसकी तजवीज़.
तू खुद मुख्त्यार है इस घरकी अैजन;
कर अपने हातसे अब इसका सामान.
कहा सुम्भेका दिन जो अबके आवे.
कोई ज़ौहरसे काज़ीको लाये.
निकाह पढ़ जाये यो आकर ज़रा यां,
नहीं कुछ चाहीये है और सामां
मुझे मन कुहा होने दीजिये आप;
जो कुछ दिल चाहे सो ही कीजिये आप.
ये सुनते ही बहुत खुश होगया वो;
और अपने बेटे को पास आपने बुलाबो.
कहा सुम्भेके दिन तु ज़ौहरको जा;

और भेड डाल्डो अपने साथ ले जा-
ये चाउर हुउम वो अपने घर डा;
हुवा मुझे के दिन बाकी रोहर डा.
गया होगा वो लस हमने डही डास;
बयांन सुकेसे जोला डरडे अहेसोस
रहे हम लडरमें डाल्डे मरीगुल;
जतासे पानडो डहना गये लुल.
न देखेंगे ने ये हो चीज डाल;
डली हरगीज न होंगे हमसे राल.
जतासे पान जिनडाल्ल्जाउर;
यसे लवेंगे यहांसे तेरे प्याउर.
डहा सुदेने सपे है जो मेरी लन;
जतासे पाहीजे और पान ली यहां.
ये बेसा दुसरा मीलु द है घर;

जल्दसे पान ले आवेगा नौकर:
निकाला मुंहसे बेटेने न कुछ हरफ;
ये सुनते ही चला वो बाहरकी तरफ.
फकत बुढा ही घरमें रहगया जब;
सिपाहीने कहा बुढेसे ये तब.
पढेंगे अब निकाह काजी आकर;
सो मैं तय्यार हो बैठूं नहाकर.
जरा तुम घरसे बाहर निकल बैठो;
बुलाऊंगी तुम्हीं घरमें नहा धो.
किया बुढेने जब घरसे किनारा;
जनाना भेस सब उसने उतारा.
वहीं मरदाना भेख एक पैहना;
लिया घरमेसे जर और नगदगहना.
बुकचा होके खातिर खाह दिलखोर;

और आके पास उसके इसी तौर;
किया झुक कर सलाम और येही पूछा.
मेरा था खेल किया ये छटके का.
ओ देख उसको इधर हैरत में आया;
उधर फिर उसने सोटे को उठाया.
लगाये पुश्तो सिर में इस कदर झट;
के खुल पीठ और सिर कुछ गया फट.
कुवाजे होरी लज उसको पकड कर;
और एक मज़बूत रस्सी में जकड कर
कुये के बीचमें लटका के उलटा;
लिया फिर वहांसे अपने घरका रस्ता
न देखा कुछ जरा पीछा और आगा;
गया एक सांस वहांसे घरको भागा;
वहां इतनेमें कालु ली आये;



जतासे पान ली ठग दोनो भाये·

ठगोंने घरमें अनज जुदा न देखा ;

हुवा अेउजार दिलओ सोपे पैदा·

लगे ठेहुने जहोतसा देखे हरसु ;

सुदा अनने गये दोनो ढिंधरडो ;

तलारी उनओ डरें हम डिस अगाजज;

घर और जाकर तो की है जुस्तजू.
कहा उन्ने उसकी उमर क्या थी;
कहा चौदह की या पंधरा बरस की.
कहा उन्ने तो अब हमने जाना;
के मुरादील है उन्हों का हाथ आना.
तुम्हारा बापथा अजब सियाना;
वो समझा ये के कौन है दाना.
निका औरतका कब मुझसे पढेंगे;
हवाले मेरे बेटों के करेंगे.
समझ कर अपने दिलमें येही बस्ता;
कहीं औरत को लेकर उठगये वा.
कहां मानो न कुछ अब कहीं तुम;
के पाओगे कहीं उसको नहीं तुम.
पढुं कुं मैंतो अपने घरको बस अब;

नहीं कुछ देखना है पैरी पैकर अजल;
मगर इतनी करो तुम मेहरबानी;
कुएं से ला पिलादो मुझको पानी।
कुये पर ले गये पानी वो भरने;
लगे अंदर नज़र अजे कजार करने।
नज़र करते ही बस क्या देखते हैं;
के जावाल लटकते हैं कुवे में
कुये में से शिताब उनको निकाला
निकाला और पलंग पर लाके डाला
वो हाल देखकर ये रंग और डौल;
हुए घर को रवाना पढ़के लाहौल।
तो बेटे मारे गम के होगये पोट;
लगा आरी तन पे जुदे के नदर गोर।
कली बेटे जतन को उसके रोले;



के जावांज किसी ढब से मुंहसे बोले·
कुली से हिलावें उसके पांउं औरसर;
कुली मीटी सुंघावें उसको लाकर :
जब आया होशमें पुछा तब अहवाल;
कहा क्या पुछते हो तुम मेरा हाल :
जैसे समझाया तुमने आह औरत;

नथी कनहार बो कि यस्वाफ औरत;
अरे तुमने न कुछ देखा न ताला;
के वो औरत नथी था जेल वाला.
उसीने जेतराफ मुझको घसीटा;
उसीने जेतराफ सोटेसे पिटा.
सुनाके माजरा जेटोने कसहम,
लगे कहने जो होतस्या होके पुरगम.
कुवेमें ली वही लटका गया है;
कमरमें जेतराफ झटका दिया है.
अगर अजके कहीं पावेंगे उसको;
तो हम क्या ही जा लवेंगे उसको.
नहीं लगता वो बजतक हाथ अरे सोस;
हमारे कोको है दिनरात अरे सोस.
करे मौला कहीं वो हाथ लग जाये;

देगा हम भी निराली ऐसा दिखलाये.
पहुंचकर फिर लगे वो देखने घर.
न पाया कुछ भी रखा था जहां ज़र:
न ज़र पाया कहीं और कुछ न ज़ेवर;
न पाया तीरों तरकश और न खंजर.
जो देखा घर को खाली मालो ज़र से;
लगे सिर मारने दिवारो दर से.
बयां सब कर चुका मैं हाल यहां का;
सुनो अब मुझ से सब अहवाल वहां का.
रवां हो तीन दिन घर अपने रहकर;
किसी से हाल अपना कुछ न कहकर.
लिये कपड़े पहन मोटे पुराने;
कहा मुफ़लिस उसे हर एक ने.
बना वो इस तरह का सीधा सादा

के पछाने ठगों का हिरन दाहा .
दवांयें ली जहांन वो ले चला साथ ;
और उसके न बना डालना हाथ .
ठगों के घर सिवा उसको नहीं ताक ;
चला वो उनके घर के सिम्त जलाक
वो चलते चलते पोंहचा उस कुवे पर
के लट आया था बुढ्ढा जिसके अंदर
न्हाके और वहां चंदन लगाके ;
लगा पुजा वो करने मन लगाके .
हुवा था जुं ही पुजामें वो मसगुल ;
सो आ पोंहचे वहीं वो दोनो मकबूल .
गये जैठ उसके दोनो देजर वो ;
लगे करने बवांसे गुफ्तगु वो .
महाराज आप आये हैं कहांसे ;



कहां फिर आप आवेंगे यहां से :
जयां हमसे करो कुछ अपना पेशा;
कया करते हो तुम पेशा हमेशा.
कहा उसने निहायत होके गमगीन;
के हुं मैं बिरहमन मोहताज मिस्कीन.
ऐसा आता हुं मैं यहां अपने घरसे;

बहोत आगाह हुं मैं हरएक हुनरसे;
मिले है मने ओहदे जिमारो रंजुर ;
वहीं करताहुं जिसका हदे हुस्न हुर .
मरी बेंकी हवा करजनता हुं ;
मरी बेंका मर्द पहेचानता हुं .
नजूम और शास्तर सेभी हुं आगाह;
मुझे मालुम है सब जेर की राह .
बहुतसे देखता हुं मैं लगूं भी;
तमाशे भी देखताहुं और जंजूभी .
गरज हर एक फनमें हुं मैं हुशीयार;
वले कीन तंगदस्तीसे हुं लाचार .
चलुं हुं अब कहीं आने कमाने ;
लगा है नाकमें दम अपने खाने .
कहा गर आप हैं हर फनमें हुशीयार;

तो रहीये आप यहां हो रोज़ लाचार;
अली यहांसे कहीं हरगिज़ न जाओ.
जो कुछ दिल चाहे सो खाने को खाओ.
पड़े हैं किज्से गाही अपने बीमार;
निहायत हो रहे हैं कि इससे लाचार.
तवाज़े करके उनका देखीये हाल.
के क्या कुछ दर्द है और क्या है अहवाल.
बस अब चलिये यहांसे घर हमारे;
बदिल ताज़े रहेंगे हम तुम्हारे.
कहा अपनी तो येही आरज़ू है;
मगर जेंकी निहायत जुस्तजु है.
इसी बाइससे मैं निकला हुं घरसे;
के पैदा कीजे कुछ ज़र हुनरसे.
सिखा दूंगा तुम्हें अपना हुनर सब;

लगेगा हाथ मेरे तुमसे कुछ तब.
ये कहकर हो लिया सब उनके यो साथ;
उन्होंने फिर पकड उसका लिया हाथ.
अगर है बाप आज़री तुम्हारा;
शिफ़ा उसके ज़िम्मा है हमारा.
गई वे साथ उसको ले गये घर;
बड़ी इज़्ज़तसे बिठाया पलंगपर.
पड़ा था एक तरफ़ बाप उनका बीमार;
लगयो बापसे ये करने इज़हार.
के ये आकर ले बैठे हैं पलंगपर;
उन्हीको देख ली है एक नज़रभर.
उन्हें लाए हैं यहां किसमत हमारी;
ये सब खोदेंगे बीमारी तुम्हारी.
तिबाबत में बहोत उस्ताद हैं ये;

निहायत आहल इल्मसे दाद है ये;
सिवा उसके हुनरमें और ली याद;
गरझ हरयक ईनमें हैं ये उस्ताद.
सुनेंगे वरके उनकी आप क्या अजब;
इलाझ अपना करावो उनसे बस अजब
वो जवाँ होगया बुरा सुनके ये बात.
वहीं कीयी बंदगी उसको उठा हात.
कहा गर आपमें ऐसा हुनर है;
तो सदका मेरा तुम पर सारा घर है.
बहोत अच्छा किया आये यहां तुम;
दवा मेरी करा गये मेहर जां तुम.
रिआये सेहत अगर दिखलायेंगे आप.
तो सब कुछ मेरे घरसे पायेंगे आप;
कहा हरकी दवासे हूं मैं वो जैद;

के कर देता हूं हर एक को दुख जो ना पैद .
तुम्हारी भी दवा अब मैं करूंगा ;
तो कुछ दुख आपको रहने न दूंगा .
शिताब अब इस तरह बोला वह हाथी;
मुझे अपना बड़ा दुख लागे है हाथी .
करें तदबीर इस दुख की दूर कर अब;
के लरज़ है तुम्हें या तप है या कफ़ :
कहा क्या देखते हो हाथ मेरा ;
न देखो हाथ देखो गात मेरा .
मरज़ मुझको नहीं कुछ तन के अंदर .
मरज़ मेरा अयां है सब बदन पर :
दवा मेरे बदन की आप कीजे ;
अब मेरे बदन की आप सीजे .
लगा फिर देखने वो उसके तन को ;

कहा शेर ने उस कजन्नन जहन को.
कि है आमें जहन सारा तुम्हारा;
रहा है जो तराह ये सूरत सारा.
और आता है नज़र सी शम्ली जो घाव;
किसी दुश्मन से आया आरने घाव.
कुछ लागी किसी से या लड़ाई
लड़ाई में कहीं ये चोट आई.
कहो किस मुद्दई ने हात डाला;
कहो किस से पड़ा था तुमको पाला.
कहा कुत्तों ने जब आज हमने खाना;
कि हो तुमसी निहायत मर्द दाना.
दवा से ही शिकारे में हथा रा.
किया मालूम तुमने हाल सारा
हमें जो खौफ़ सताया मुद्दई ने :

जिसा थीके हुज दिखाया मुहँ छिने.
मैं केह सकता नही य माजरा सज;
मगर कुछ गेजे सुनाता हुं तुम्हें गजज.
के लाया था ज्वां गेके जेल छिसल्ने;
तो पुछा उसने मुझसे मोल उसका.
कही मैं उसकी किमत छे टके सज;
गया वो जैल अपना छोड यहां ताज.
जनाली मैंससे फिर यहां वो आया:
हमारे साथ डया डया रीर लाया:
न जी हमने जराली दिलमें कुछ गोर;
जस आवीक होगये हम उसके दिलसोर
लगारे हने हमारे घरमें आकर;
लिया सज लेर घरका दिल लगाकर:
दिखाई थी ले उसने तोसी कुछ आन.

कि जिन उसपर जगामें डरने कुरजान.
कई दिन बाद फिर ये घाव मेला;
कि मुझको देखकर घरमें अकेला.
यहांतक उसने मारा क्या कहुं मैं;
ये ही बेहतर है चुपका हो रहुं मैं.
सिवा उसके वो लेकर सिमा जरमाल;
गया भाग अपने घरको यहांसे फिलहाल
गरज उसने जहुलसा मुझको मारा;
लिया और लूट ली सब घर हमारा.
कहा उसने जरोत जोर किया है;
जो तुमको इस तरफका दुख दिया है
मगर तुमने भी ये जोर किया था;
कि जैसे उसका जलाया छ टकेका.
मेरे नजदीक दोनुकी खता है;

पसे ले कुछ कहो तुम सो जल्द है.
पे कहकर फिर जताया उसने मरहम;
लगाया ज़ख़म पर किसके किसी दम.
कहीं हलदी लगाई और कहीं कुछ;
लगाने को लगा हरदम कहीं कुछ.
कभी सेके बदनको आगही से;
कभी मालिश करे तेल और घीसे.
कभी घीसे कराताथा वो परहेज़;
कभी थी दालमें करताथा आमेज़.
खिलाताथा कभी वो मुंगकी दाल;
कभी कलीया किसी दीन मछलियांदाल.
लगा पंगा वो होने दिन जहीन तज;
सिपाहीकी सिफ़त करने लगा तज.
के तुमको खुब है उसकी दवा यार;

अब तुम सब हकीमों के हो उस्ताद.
मरज़ मेरा किया है आपने दूर;
न हूं मैं आपका किस तरह मशकूर.
मुझे अब कर चुके हैं आप चंगा;
ले फेर आवो नहाऊं जाके गंगा.
कहा देंगे तुझे हो तुम अली कब;
न बिमारी गई है आपकी सब.
अभी खावो दवा दो चार दिन और;
हटा दूंगा तुम्हें हरगिज़ न दिन और.
दवा खेके और ली ले आवोगे तुम;
तो मुद्दे से नयां हो जावगे तुम.
वसे बस भी बढ़ी की मैने तसबीह;
सो अब जा कर से आवेगी वो बीहक.
कहूं मैं ले कुछ अब मंगवा के आप;

और उसको दुखसे फिर आये आपे.
पूछा आके तुम्हें आ लगे वो तीर;
के जिस इस तीरका हो करतारे वीर.
गर न तुमको करैगा इस क़हर में राह.
के रखोगे हमेशा मुझको तुम याद.
अगर लेने दवा मैं आप न जाऊं;
न जानूं के आऊं या न आऊं. -
कोई भील लयगा वहां मुझको जिमार,
न आने देगा मुझको वहांसे जनहार.
ये सुनते ही गिरा पैरों मे गर वो
और उसके पांउं पर रखा अपना सिर यो.
कहां हां मुझको ऐसी ही दवा दो;
ले हो नउ दवा फिर अज सरे नौ.
करो ऐसी ही मुझपर मेहरबानी;

बुढ़ापा जावे और आवे जवानी.
दवा लेने न तूम बस्ती में जाओ;
अमीरा लावेगा जो कुछ बताओ.
नहीं मेरी ये मरज़ी बुड्ढे ज़नहार:
के जावो तुम दवा को सूए बाज़ार.
कहां फिर ये अमीरा को बुला कर;
के जा तू और दवा बस्ती से ला कर.
गया लेने दवा जो कुछ बता थी;
घड़ी एक बाद फिर जो ला सिया थी.
के याद आई है मुझको एक दवा और;
मंगाना आज ही ये बोली किसी तौर.
सुनी बाली वहां भी बुदया ही
हुवा घरसे उधर को बाली राही
अकेला रह गया बुड्ढा जी घर में जब

सिपाहीने उधर आंधी वहीं तज.
जो ज़ेवरसे उसके था वो आगाह;
लिया फ़िर ज़ेवरो ज़र ओ दिलख़्वाह.
वहीं फ़िर सामने बुढे के आ कर. ;
खेंचा जोड़े जंगी से सिर झुका कर.
कहा फ़िर आपपे जूत लाठी ये गए:
मेरा था जेस लिया वो छेटके का
ये सुनते ही उपर उसके गये फ़ोरा.



उधरसे हाथमें न लह उसने पापोस.
पंजापेड उसकदर सिरमें लगाई;
के गिनतीमें भी जुढे के न आई.
हुवा यो पिटते पिटते लजके जहोरी
यसाघरको सिपाई हाके आमोरी
उधर घर अपने पोंहचा वो सिपाही;
उधर घर आये येही दोनूं भाई.
पहरडा अपनें देखा लजके येहाल;
लगेतब पुछने वो उससे अहवाल.
कहो यु किस लिये जहोरा हो तुम;
कहो किसवास्ते आमोरा हो तुम.
नजर आया नहीं वो जेहली घर;
के जो हर जालमें केहताथा हर हर.
कहा जुडेने कुछ अजेब होरामें आ;

कि पुछो हो मेरा अहवाल तुम क्या.
ऐसे था तुमने समझा जैद वल्लाह.
सो निकला अस बाला शेखस जहां जाक
गये हो तुम चली हातो उपर कां;
लीया अस सर उसने युंही घरको.
फिर आकर सामने मेरे वो जहलान;
लगा अस मारने पापोश और लात
हुवा अजतक नहीं जे हारो जेहम;
वो मारे ही गया पापोश पै हम.
कहो आगे कहां मैं उसका मारा;
वो यहां करने नहीं देता गुजरा
मुझे उसने किया है जे तरह तंग;
नहीं कुछ पूछ मेरे हस्तका ढंग.
वो फिस फिस दीपसे आता है अफसोस;

वो क्या क्या रूप दिखलाता है अफ़सोस
ये अजदहाँ जैस लाये आह तुम यहां;
चली इस जैसके पीछे मेरी जान:
नहीं वो छोडता पीछा हमारा;
करें हम किसतरहा अपना गुजरा·
फिरे हैं वो मेरे लेने को जं गअज;
घर अपना छोड कर जाउं कहां अज·
अगर वो युंही यहां आता रहेगा;
तो अेक दीन इ मेरा जाता रहेगा·
कहा जेटोंने गर आवेगा वो फिर;
हम उसका काट डालेंगे वहीं सिर·
किया है जुलम उसने हमपे जेतौर;
न भुलेंगे कभी हम उसका ये जौर·
वो यहां इस रूपसे आवेगा मकार;

उसे कना हम छोड़ेंगे कनहार।
अजर हार उसके अज हर हम रहेंगे;
ज होतसे कुरा यार अज हम रहेंगे।
रहेंगे खिदरमें हम उसके दिनरात;
किसी दीन आखिरी लग लथगा हात।
जस अज घरसे नलवेंगे कहीं हम;
रहेंगे ओघ दिन जैठ वहीं हम
यहां वो मदरसे आयाहै दो आर;
कुली कया फिर न आवेगा वो मकार।
गरज वो हर तरहसे होके पुर लेरी;
फिर आखीर होगये आपार आमोरी।
सुनो अज उस सिपाही का ये अहवाल;
ये क्या किया कुछ किया घरलके दिलहाल
लगा जालरसे सजकुछ मगाने ;

लगा मेवा मिठाई रोज़ खाने .
कभी वो खूजसा हलवा पकावे;
खिलावे औरको और आप खावे
कभी आमेज़ करके शकर और घी;
मज़े से हात मारे भात पर भी .
लगा वो खरच करने ज़जके जेजाक;
दिले हमसायेगां जल जल हुवा खाक .
जो देखा था उनहोंने उसका वो रंग;
पडा यक दिलमें डर वो होगये दंग
कही उन भाईयों ने उससे ये बात;
कहां से ज़र लगा इतना तेरे हात .
तु करता है ये ज़र सौ राहमें खरच;
नहीं करता है कोई इतना भी खरच
नज़र आता है तुं ज़रदार हमको;

जहान बरबाद और हुआ ख़ार हम को.
तुम्हें आसूदा और है शादि गुलज़ार,
उधर भी हो न कभी मुबतिला इस हाल.
जहान तकलीफ़ में है आ बकार हम;
नहीं इस ग़म से शादी ग़म अंदेश हम.
कहा था जौहरात पे तूने आकर :
के लाया लाल था मैं एक कमाकर
किसी के हाथ उस को बेच लाया;
फिर उसका मोल भी मैंने न पाया.
ये कहा जब तुम के क्या लाया यहां से;
के आया है सफ़र कर के कहां से.
कहा सच तो कही थी मैंने ये बात;
के क़ीमत लाल की आई नहीं हात.
गया फिर मैं ले उसके पास हो ज़ार;

दिया कुछ अरथ मुझको प्यारो ना प्यार
जिसको कि जहान वो मरद अजीरा है;
और उसका है निहायत मुझसे दिलसार
ऐसा अना कि उसके पास न ज ही;
वो देता है मुझे कुछ अरथ तज ही
वलेकिन उसके जेटे हैं अले दो और;
सो उनका है निहायत तौर जे तौर
मैं अज अता हुं लेने जेल के दाम;
तो टरराने लगे हैं वो जद अंअम;
पिदर है उनका ही कुछ मरद माकुल;
कुपे उसका अरथ देनका है मामूल
डरी मैं जिस तरफ़से उसकी तारी है;
के हो सकती नहीं है उसकी तौसी है
न अनाया सो तुमने जजतो अना

जहौसत उसके मैं जाता हुं आना
लगा तुम भी पलो अजके में रखा
य ऊीं है अरपे कुछ सगलयगा का
वहांसे तुम भी आवोगे न आर्व
डे है लगे थे अपनी हैमी लाव
वो बोले हां इ पुरी जा आतिरे रोर
जब जावेंगे हम भी हसजछे रैता
जब अजके सार्य हमकुं ले गलो वहा
जडा हांगा तुमारा हमपे अहसां
किया कुछ लहसे उसने न आगाह
पेला वहां ताछ्या को ले के हमराह
रहा न कहीं के घर तब उन लगों का
बचाने उसके घर उनको छिपका
कहा यहांसे उठ्म कसदी उगकर

ये हो आवाज़ दरवाज़े पे आकर .
के कोई आदमी भी घर के ईस दम ;
के आये हैं यहां ईस गामको हम .
तुम्हारा नाम पुछेंगे वो बाही ;
तो कहना जैसलवाला हूं सिपाही .
अगर बुढा यहां होगा ईकन घर ;
बहोत सा मेहरबां होगा वो तुमपर .
खयाल आपका यहां तक करेगा ;
के पैरों पर तुम्हारे सिर धरेगा .
अगर उसके पिसर घर होंगे मोजूद ;
लडनको मुस्तअेद होंगे वो मरदूद .
उन्हें तुम देखते ही भाग जाना ;
वहांसे भागकर फिर घरको आना .
नहीं कमजोर उनसे तुम भी ज़िनहार ;

जाने आवेंगे उनहींके हातसे मार ·
गरज दोनोंने दरवाजे के ऊपर ;
ठगोंके दी वहीं आवाज जाकर ;
अमीरा और मुनीरा घर थे मौजूद ;
एकाएक झोंक कर यो दोनो मरदूद ·
लगे कहने के क्यां है नाम तेरा ;
कहा कै जैलवाला नाम मेरा ;
ये सुनतेही वो बाहर घरसे आये ·
उन्होंने ली कदम वहांसे उठाये ;
लगे ये भागने जब वहांसे छुटी ;
लिया उनको पकड दोनोंने वहीं ;
लगी होने फिर आपसमें लडाई ;
लगे करने जहोल मारा कुटाई ·
जवांने दूरसे ये देख अहवाल ;

यहांके दुसरे रस्तेसे बरिलहाल·



ठगोंके घर पोंहचे और लेके पापोरा;

वहीं जुढके आये मार कर होरा·

फिर अपना जैलओल और सृयआना

हिसेराना हुवा वहांसे रवाना·

घडी अेक जाहर आये दोनु जहलत;

जहोतसा पुछते औौर काडते गात ;
ले देखा जाये कि अनअजके जेहारी ;
तो जेरोनें कहा तुम किउ हाथामारो ·
गये थै छोडकर हम तुमको अकेला ;
कहो इतनेमें तुमको होगया क्या ·
कहा मैं क्युं नहूं इसतरह जेहारी ;
के फिर अब सिरपे आई मैंने पायोरी ·
गये हो तुम यहांसे आह लुही ;
सिपाही जैलवाला आके यहीं ·
मुझे जब लुतीयोंसे खुबसामार ;
फिर अपने जैलपर पैठकर वो तसार ·
गया फिल फ़ौर यहांसे भाग घरको ;
न देखा फिर नजर भरकर इधरको ·
नलने क्युं गयेथै यहांसे किसल्ले ;

ये ही तेहजूज मेरी उसने जेल्ना ·
कहा वो मुर्दह यहां कीधर आया;
उसे तो मारकर हमने लगाया ·
लला तुमने न क्यूं हमको पुकारा;
हमारे हाथसे वो लता मारा;
हम उसका घरही घरसे काम करते;
तुमहारा और अपना नाम करते ·
कहा पुढेने तुमसे कुछ न होता;
ले होता युं तो मैं काहीको रोना ·
मगर अच्छा हुवा वो लेगया जेल;
कर्ईस कमजअतकामनहूस थाजैल ·
जंपा आकर हमारे घर वो ब्जसे;
बराबर होगये जरजाह तजसे ·
गया वो जैल लेकिन जयेगये यहां;

के वो मझधार आवेगा नज़िर यहा .
हमारा लुटगया घर जिससे सारा ;
छुटा मझधारसे पीछा हमारा
गरज युं करके जाते जाहिदे रेस ;
फिर आखीर को रहा चुप वो जहआंहस .
लगांडा करु युडामें मालरा सब ,
सिपाही का सुनो अहवाल तुम अब .
के जब लेकर गया वो जेल घरपेर ;
तो बोले उससे वो दोनो बिरादर .
के यहांसे टलगया था तूं किधर आह ;
वो दोनो हमको आ मिलते थे जहआह .
उन्होंने हमको मारा उस तरफसे ;
गई इज्जत हमारी उस तरफसे .
छुडाकर अपना पिछा उसने लुनुं ;

घर अपने भागकर आये हैं सोवुं.
कहा मैं कह दिया था अवल नहीं;
के जैसे उसके हैं जरलत चाही.
न देखा होगा फरागिश कुछ परवो पैरा,
जिधर तुमको गये होंगे था जरके पैरा.
उन होंके घर गया था मैं भी बराफ़.
मगर मुझको दिया कुछ भी न अपरपे आफ़.
जो हाथ आते नहेंया बैलका मोल;
तो लाया उसके घरसे बैलको खोल.
भी लेगा अर कोई गाहक मुझे और;
तो मैं इस बैलको बेचुंगा दिलजौर.
जहांसे बैलके मैं दाम लुंगा;
वहांसे कुछ तुम्हे भी अरपे दुंगा.
अस अज पुरोहित जजांको जंहाकरतु;

अफ़ोत्सा डेफ़ धुआ हँ हर गुलरतू.

तमाम अज्ज फ़ोमुडी ये सज उफ़ानी;

डरी हैं तुने जस गाँफ़र दिरैानी.

